मैं बी० सी० जी० का विरोधी क्यों?

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक २५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २० अगस्त, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

खादी और ग्रामोद्योग

[आज अेक हद तक अिन अुद्योगोंका महत्त्व समझा जाने लगा है। यद्यपि यह संतोषजनक नहीं है, फिर भी हमें अपनी आर्थिक विचारसरणीकी आजकी मंजिल पर अितना विश्वास रखना चाहिये कि केवल अिसी तरह हम अपनी राष्ट्रीय अर्थ-रचनामें अिन अुद्योगोंके सच्चे मूल्य और बुनियादी महत्त्वको समझने लगेंगे और अुनकी कद्र करने लगेंगे। गांधीजीने हमें अुनका महत्त्व समझाया था। अिसलिअे अुन्होंने खादी और ग्रामोद्योगोंके बारेमें जो कुछ कहा था अुसे याद करना ठीक होगा। नीचेका हिस्सा अुनकी गहरे विचार और अभ्यासके बाद लिखी हुअी पुस्तिका 'रचनात्मक कार्यक्रम' से लिया गया है — वह कार्यक्रम, जिसे कांग्रेसने स्वीकार किया है और जो आज भी अुसकी घोषित नीति बना हुआ है।

२–८–'५५ —म० प्र०]

खादी-वृत्तिका अर्थ है जीवनके लिअे जरूरी चीजोंकी अुत्पत्ति और अुनके बंटवारेका विकेन्द्रीकरण। अिसलिअे अब तक जो सिद्धान्त बना है, वह यह है कि हरअेक गांवको अपनी जरूरतकी सब चीजें खुद पैदा कर लेनी चाहिये, और शहरोंकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे कुछ अधिक अुत्पादन करना चाहिये।

अलबत्ता, बड़े बड़े अुद्योग-धंधोंको तो अेक जगह केन्द्रित करके राष्ट्रके अधीन रखना होगा। लेकिन समूचा देश मिलकर गांवोंमें जिन बड़े बड़े आर्थिक अुद्योगोंको चलायेगा, अुनके सामने ये कोअी चीज न रहेंगे।*

* * *

खादीके मुकाबले देहातमें चलनेवाले और देहातके लिअे जरूरी दूसरे धंधोंकी बात अलग है। अुन सब धंधोंमें अपनी राजी-खुशीसे मजदूरी करनेकी बात बहुत अुपयोगी होने जैसी नहीं है। फिर अुनमें से हरअेक धंधा या अुद्योग अैसा है, जिसमें अेक खास तादादमें ही लोगोंको मजदूरी मिल सकती है। अिसलिअे ये अुद्योग खादीके मुख्य काममें सहायक हो सकते हैं। खादीके अभावमें अुनकी कोअी हस्ती नहीं, और अुनके बिना खादीका गौरव या शोभा नहीं। हाथसे पीसना, हाथसे कूटना और कछोरना, साबुन बनाना, कागज बनाना, चमड़ा कमाना, तेल पेरना और अिस तरहके सामाजिक जीवनके लिअे जरूरी और महत्त्वपूर्ण दूसरे धंधोंके बिना गांवोंकी आर्थिक रचना संपूर्ण नहीं हो सकती, यानी गांव स्वयंपूर्ण घटक नहीं बन सकते।+

सच्ची योजना

[अिसलिअे गांधीजी बारबार हमें चेतावनी देते थे कि सच्ची योजना बड़े पैमानेके भारी अुद्योग खोलनेमें नहीं, बल्कि अिन छोटे पैमानेके अुद्योगोंके विकासमें है। १९४७ में अुनसे अिस संबंधमें जो सीधा प्रश्न पूछा गया था, अुसका अुत्तर नीचे दिया जाता है:]

प्रश्न — सरकार हिन्दुस्तानके कच्चे मालका पूरा-पूरा फायदा अुठानेके लिअे देशमें अुद्योग-धंधे खोलनेकी योजनायें बना रही है। लेकिन वह अुन लाखों-करोड़ों आदमियोंको रोजी देनेके बारेमें कोअी योजना नहीं बनाती, जो निकम्मे और आलसी बनकर बरबाद हो रहे हैं। क्या अैसी योजनायें 'स्वदेशी' मानी जायंगी?

अुत्तर — यह प्रश्न बड़े अच्छे ढंगसे पूछा गया है। मैं ठीक ठीक नहीं जानता कि सरकारकी योजना क्या है। लेकिन मैं हृदयसे अिस बातका समर्थन करता हूं कि देशके कच्चे मालका अुपयोग करनेवाली और ज्यादा ताकतवर मनुष्योंकी परवाह न करनेवाली कोअी भी योजना न तो देशमें सन्तुलन कायम रख सकती है और न सब मनुष्योंको बराबरीका दर्जा दे सकती है।

अिसलिअे सच्ची योजना तो यह होगी कि हिन्दुस्तानकी समूची मानव-शक्तिका अच्छेसे अच्छा लाभ अुठाया जाय और कच्चा माल विदेशोंको भेजकर अुसके बदले भारी दामोंमें तैयार माल खरीदनेके बजाय अुसे हिन्दुस्तानके लाखों गांवोंमें ही बांट दिया जाय।

हरिजनसेवक, २३–३–'४७ गांधीजी

श्रद्धांजलि

१५ अगस्त फिर आ रहा है। घर घरमें आजादीका दिन खुशीसे मनाया जायगा। कभी आंखोंसे आंसू बह निकलेंगे खुशीके और गमके। हिन्दुस्तानके कोने कोनेमें अैसे लोग हैं जिनके प्रियजन आजादीकी लड़ाअीमें शहीद हुअे। अुनमें से बहुतोंके नाम भी कोअी नहीं जानता। जिनके नाम हम जानते हैं, अुन्हें भी आहिस्ता आहिस्ता जमाना भूलता जा रहा है। मगर अेक नाम भूला नहीं जा सकता, वह है श्री महादेव देसाअीका। श्री महादेव देसाअी अेक प्रकारसे १९४२ की लड़ाअीमें बलिदान होनेवाले सब शहीदोंका प्रतीक बन गये हैं। १३ साल पहले आजके रोज १५ अगस्तको जब अुन्होंने आगा खां महलकी जेलमें प्राण छोड़े, तब बापूजीने अुनकी मृत्युको शुद्धतम बलिदान कहा था। अुनकी पत्नी श्रीमती दुर्गाबहिन देसाअीको तार द्वारा सन्देशा भेजा था, "शोक मनानेकी अिजाजत नहीं, महादेवने योगीकी और देश-भक्तकी मृत्यु पाअी है।" अुन्हें यकीन था कि अिस प्रकारके बलिदान आजादीका दिन नजदीक लायेंगे। महादेवभाअीकी मृत्यु अिसके ठीक पांच साल बाद १५ अगस्त, १९४७ को आजादी लाअी। मानो अुस शुद्धतम बलिदानकी स्मृतिको ताजा रखनेके लिअे ही भगवानने १५ अगस्तको हमारा आजादीका दिन बना दिया, ताकि पीढ़ी दर पीढ़ी हम १५ अगस्तके रोज आजादीके दिनके साथ साथ महादेवभाअी तथा अुनकी तरह आजादीकी देवी पर अपना

* 'रचनात्मक कार्यक्रम', पृष्ठ २०

+ र० का०, पृष्ठ २६

www.vinoba.in

सर्वस्व निछावर करनेवाले सब शहीदोंकी स्मृतिमें अपनी श्रद्धांजलि चढ़ावें, शहीदोंके प्रति श्रद्धा और भक्तिके चार आंसू बहाकर अपनेको पावन करनेका प्रयत्न करें और शहीदोंकी यादसे कुछ प्रेरणा पावें। आजादीकी जंग अभी पूरी नहीं हुअी, अुसका रूप बदल गया है। परदेशी हुकूमतसे आजादी तो हमने पा ली, पर अब हमारी जंग है बेकारी और बीमारीसे मुक्ति पानेके लिअे। अिस जंगमें सफलता पानेके लिअे भी अुसी त्याग, दृढ़ता और कठिनाअियोंका सामना करनेकी तैयारीकी जरूरत है।

महादेवभाअीको बापूकी छायामें आनेकी और अुनके चरणोंमें अपना सर्वस्व निछावर करनेकी प्रेरणा तो अुनके पूर्व जन्मके पुण्यसे मिली, किन्तु बापूके संपर्कमें आनेके बाद अुनके आदर्शों पर अडिग रहनेकी शक्ति अुन्हें अुनकी धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गाबहिनसे मिली। महादेवभाअी जब बापूके पास पहुंचे तब वे २५ वर्षके नौजवान थे। पति-पत्नीने आश्रम जीवनकी कड़ी तपस्या शुरू की। अेकादश व्रत पालनमें पूरी शक्तिसे लग गये। अिसमें दुर्गाबहिनने हर प्रकारसे महादेवभाअीको सहायता दी। आश्रम-जीवन अपनानेमें अुन्होंने कभी न शिकायत की, न अुसमें कष्ट महसूस किया। सारा आश्रम परिवार अुनका अपना परिवार बन गया।

२० जूनको श्रीमती दुर्गाबहिनकी मृत्युका समाचार पाकर मैं दौड़ती हुअी बेड़छी पहुंची। बापूने जो कुटुम्ब हमें दिया, अुसमें अेक और महत्त्वका स्थान खाली हो गया था। महादेवभाअीकी मृत्युके बाद बापूने दुर्गाबहिनको लिखा था, "नारायणको अपने पिताका स्थान लेनेके लिअे तैयार होना चाहिये।" दुर्गाबहिनने सेवाग्राम आश्रममें बैठकर नारायणकी तालीम पूरी करनेका निश्चय किया। नारायणने नअी तालीमका अभ्यासक्रम पूरा करके गुजरातमें नअी तालीमका काम करनेका फैसला किया, तब दुर्गाबहिन सेवाग्राम-आश्रमसे पुत्र और पुत्रवधूके साथ बेड़छी आश्रममें रहनेको चली गअीं। जैसे महादेवभाअीके काममें हर प्रकारसे सहायता देनेका प्रयत्न हमेशा अुन्होंने किया था, वैसे ही अपने पुत्रके भी शुभ संकल्पको निभानेमें वे तत्पर हो गअीं। अुसके पीछे जब नारायणने भूदान कार्यमें लगना तय किया तो मांने सहर्ष अुस निश्चयका भी समर्थन किया और आशीर्वाद देकर अुसे अिस कठिन कार्यमें भेज दिया। भूदान कार्यके सिलसिलेमें नारायणको अकसर यात्रामें रहना पड़ता था, दुर्गाबहिनका स्वास्थ्य अच्छा न था, मगर अुन्होंने कभी यह नहीं चाहा कि देशके सेवाकार्यको छोड़कर बेटा अुनकी सेवाके लिअे घर पर रहे। अन्तिम समय सामान्यतः जिसे कुटुम्ब कहा जाता है अुनमें से कोअी भी अुनके पास न था। अुस दिन नारायणके साथ वे बारडोली आश्रमसे बेड़छी आअीं, घर साफ किया, अुसी दिन दोपहरको लड़केको अुड़ीसाके लिअे बिदा किया और रात बारह बजे खुद अिस संसारसे चल दीं।

शायद अिस दम्पतिके सेवाभावको देखते हुअे ही भगवानने पति-पत्नी दोनोंको बिना रोगशैया ग्रहण किये मृत्यु प्रदान की। अुनकी आत्माकी अेक ही लालसा थी — देशकी सेवा, बापूजीके आदर्शोंका सेवन, बापूजीके जीवनकार्यमें अपने आपको विलीन कर देना। अन्तिम श्वास तक अिस साधनामें महादेवभाअीने अपना जीवन लगाया। अुसी साधनामें पतिके मार्गको सुगम बनाते हुअे, पुत्रके मार्गको सुगम बनाते हुअे दुर्गाबहिनने देहत्याग किया। अैसे त्याग और बलिदानकी नींव पर हमारी आजादीकी अिमारत खड़ी की गयी है। अुस अिमारतको मजबूत और चिरस्थायी बनानेके लिअे, अनेक भयोंसे अुसकी रक्षा करनेके लिअे अुसी प्रकारके त्याग और बलिदानकी आज आवश्यकता है और आगे भी होगी।

१३-८-'५५ सुशीला नैयर

कच्छमें शराबबन्दी

कच्छ अेक छोटा ग-वर्गीय राज्य है जिसकी कुल जनसंख्या ६ लाख है। भारतके बिलकुल ही पश्चिमी हिस्सेमें अवस्थित और अेक तरफ रेगिस्तान तथा दूसरी तरफ समुद्रसे घिरे होनेके कारण अुसकी ओर लोगोंका ज्यादा ध्यान नहीं जाता था।

भारतके विभाजन और अिस रियासतके विलयके बाद कच्छको थोड़ी प्रमुखता प्राप्त हुअी; कारण, कुछ अुत्साही और अुद्योगी सिन्धी मित्रोंको अपने प्यारे कराचीकी जगह — जिसे अुन्हें छोड़ देना पड़ा था — वहां सिंधियोंकी अेक बड़ी बस्ती बसानेका विचार सूझा। गांधीधामको — अिस बस्तीका आजकल यही नाम है — बसानेमें और कूंडलाको पहली श्रेणीके बन्दरगाहका रूप देनेमें भारत-सरकारने अच्छी आर्थिक मदद दी। यह आकस्मिक संयोग कच्छको बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है, क्योंकि विभाजनके बाद कराचीमें काम पानेका प्रधान जरिया बिलकुल ही बंद हो गया था। हमारी राष्ट्रीय सरकार अिन दिनों कच्छका हर तरह विकास करनेमें बड़ा योग दे रही है। अिस प्रगतिमें अेक ही बड़ा दूषण है — अिस राज्यमें शराबबन्दी नहीं है।

अैसा मालूम होता है कि पिछले समयमें कच्छके राजाने कच्छके चार-पांच शहरोंमें देशी शराब बेचनेकी दूकानें खोलनेकी अिजाजत दे रखी थी। चूंकि अुन दिनों आवागमनके साधन बहुत कम थे अिसलिअे अिस बातका असर स्थानीय लोगों पर ही पड़ता था और चूंकि लोगोंके रहन-सहनका स्तर बहुत नीचा था, अिसलिअे अुस पर किसीका ध्यान नहीं जाता था। लेकिन गांधीधाम और कूंडला बन्दरगाहकी अभी अभी जो बढ़ती हुअी है, अुसने परि-स्थितिको बदल दिया है।

कुछ दिन पूर्व मुझे अुस जगहको देखनेका मौका मिला जिसका विकास किया जा रहा है। मैंने वहां कोअी १५,००० आदमियोंको — जिनमें से ज्यादातर पिछड़ी हुअी जातियोंके हैं — सामान्य मजदूरीके काम करते हुअे देखा। हरिजन भाअियोंने शिकायत की कि वहां शराबकी दूकानोंके होनेके कारण अुनकी बड़ी बरबादी हो रही है। यह जानकर मुझे और भी दुःख हुआ कि कायदे-कानूनोंके बावजूद वहां शराब शराबकी दूकानोंके सिवा दूसरी जगहोंमें, जैसे होटलों आदिमें भी मिल सकती है और वह शहर जिसका नाम राष्ट्रपिताके नाम पर — जो शराबबन्दीके सबसे बड़े हिमायती थे — रखा गया है, गैरकानूनी शराबके लिअे प्रख्यात हो गया है। मुझे बताया गया कि कच्छके कार्यकर्ता और सरकारके वर्तमान सलाहकार — सब जितनी जल्दी संभव हो शराब-बन्दी जारी करानेके लिअे पूरा प्रयत्न कर रहे हैं और अिस विषयमें केन्द्रीय सरकारसे अुचित कार्रवाअी करनेके लिअे कहा गया है। मैं लोगोंसे प्रार्थना करता हूं कि वे अिस राज्यमें जितनी जल्दी हो सके पूरी शराबबन्दी जारी करानेके लिअे अपने प्रभावका अुपयोग करें, ताकि अिस प्रगति कर रहे राज्यका अुज्ज्वल नाम कलंकित न हो। मैं गांधीधामके संचालकों और कार्यकर्ताओंसे भी मिला और अुन्होंने स्वीकार किया कि शराबका धंधा सचमुच राष्ट्रपिताके पवित्र नाम पर रखे गये अिस जगहके सुन्दर नामको मलिन कर रहा है। मैं विश्वास करता हूं कि अिस महत्त्वपूर्ण सवाल पर अुचित विचार किया जायगा और अिस स्थानको शराबके बुरे और अनैतिक प्रभावसे बचा लिया जायगा।

२६-७-'५५ परीक्षितलाल मजमुदार

(अंग्रेजीसे)

शराबबन्दी क्यों ?

भारतन् कुमारप्पा

कीमत ०-१०-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

बुद्ध और आधुनिक जगत

दुनिया आज जितनी समृद्धिवान् है अुतनी पहले कभी नहीं रही और न पहले कभी अुसके पास सुख और आरामके अितने साधन रहे जितने आज हैं। आज हर चीजकी चाहिये अुतनी विपुलता है।

लेकिन साथ ही मनुष्यका जीवन अितिहासमें पहले कभी अितना अरक्षित नहीं रहा जितना आज है। विज्ञानके वरदान अभिशाप हुअे जा रहे हैं, अैसा डर लग रहा है। हमारी सारी भौतिक अुन्नति और वैज्ञानिक विकास अिस गंभीर परिस्थितिका नियंत्रण करने और मनुष्यकी आन्तरिक अभीप्सा शान्त करनेमें व्यर्थ सिद्ध हो रहा है। बड़े-से-बड़े बुद्धिमान और बड़े-से-बड़े शक्तिमान वुनियादी सवालके मूलको पकड़ने और अुसे सुलझानेमें असफल हो रहे हैं। जीवन और सभ्यताका अस्तित्व ही खतरेमें पड़ गया मालूम होता है।

मनुष्यके सामने आज जीवन और मृत्युका विकट प्रश्न अुपस्थित हुआ है। अुसके मनमें यह अदम्य सवाल अुठ रहा है कि सुख-संपत्तिके ये सारे साधन क्या अुसे सचमुच शान्ति दे सकते हैं? क्या अुसकी यह सारी खटपट बिलकुल व्यर्थ नहीं है? और घटनाअें जिस तीव्र वेगसे घट रही हैं, वे अुसे अुसी निष्कर्ष पर पहुंचनेके लिअे बाध्य कर रही हैं जिस पर दुनियाके सारे महान् शिक्षक—जो गैलीलियो और न्यूटनसे भी अधिक प्रतिभाशाली और अलेक्जेन्डर तथा वेलिंगटनसे भी अधिक वीर थे—पहुंचे हैं।

अुनमें भी बुद्ध सर्वोच्च थे जिन्होंने ढाअी हजार वर्ष पहले मनुष्य-जीवनके सनातन धर्मकी घोषणा करते हुअे कहा:

न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति अेस धम्मो सनन्तनो॥ (धम्मपद, ५)

(वैरसे वैरकी शान्ति कभी नहीं होती, अवैरसे ही होती है। यही सनातन धर्म है।)

दूसरे शब्दोंमें, अिस दुनियामें हिंसा कभी हिंसा द्वारा नहीं जीती जा सकती, वह अहिंसा द्वारा ही जीती जा सकती है। द्वेष और हिंसा अधिक द्वेष और हिंसाको जन्म दे सकते हैं, और अिस प्रक्रियाकी समाप्ति द्वेष करनेवाले और भोगनेवाले, दोनोंके विनाशमें ही हो सकती है।

राजनीतिक और सैनिक, दोनों ही क्षेत्रोंके विशेषज्ञ अब अिस सत्यका समर्थन कर रहे हैं। ब्रिटेनके मजदूर पक्षके नेता क्लीमेंट अेटली कहते हैं, "युद्धको फुटबालकी मैचकी तरह नियंत्रित नहीं किया जा सकता। अुसे मनुष्य-धर्मके अनुकूल नहीं बनाया जा सकता। अुसे अेकदम मिटाकर ही अुससे त्राण पाया जा सकता है। ज्यों-ज्यों देर हो रही है त्यों त्यों यह आशंका बढ़ती जाती है कि कहीं कोअी चिनगारी सुलगकर दुनियाको आगकी लपटोंमें स्वाहा न कर दे।" केपटेन लिडैल हार्ट, जो ब्रिटेनके अत्यंत प्रसिद्ध युद्ध-विशेषज्ञ हैं, कहते हैं: "अिस अणु-युगमें जो भी युद्ध होगा वह दुनियाके सारे राष्ट्रोंका विनाश कर डालेगा।"

अिस बातको बीसवीं सदीके वैज्ञानिक-ऋषि आअिन्स्टीनने भी अपनी क्रान्त-दृष्टिसे पहले ही देख लिया था। अेक बार जब अुनसे पूछा गया कि "दूसरा महायुद्ध अणुबम द्वारा लड़ा गया, तीसरा हाअिड्रोजन बम द्वारा लड़ा जायगा, पर चौथा किस अस्त्रसे लड़ा जायगा?" तो अुन्होंने तत्क्षण अुत्तर दिया, "तीर-धनुषसे!"

तो शान्तिकी स्थापनाके साधनके रूपमें युद्धकी व्यर्थता पूरी तरह प्रगट हो गयी है। लेकिन शान्तिका महल हवामें नहीं बन सकता, अुसके खड़े होनेके लिअे कोअी ठोस नींव चाहिये। दुनियामें शान्ति तब तक नहीं हो सकती जब तक कि दुनियाके हर देशमें शान्ति न हो, प्रत्येक देशके हर प्रान्तमें, प्रत्येक प्रान्तके हर जिलेमें, और प्रत्येक जिलेके हर गांव और शहरमें शान्ति न हो। शहर और गांवमें शान्तिकी स्थापना हुअे बिना दुनियामें शान्तिकी आशा करना बीज बोये बिना वृक्षके अुगनेकी आशा करने जैसा है।

प्रश्नकी गांठ यहीं है। गांवमें शान्तिकी रक्षा कैसे की जाय? जाहिर है कि अिसका अुपाय अुन कारणोंको दूर करना ही है जो अिस शान्तिको विक्षुब्ध करते हैं।

यह बात नयी या अपूर्व नहीं है। सच तो यह है कि मनुष्य अपने घरमें अुसका आचरण करता ही है। अुसे अपने घरमें सुख और शान्ति क्यों मिलती है? क्योंकि:

(१) घरमें व्यक्तिगत मालिकीका कानून नहीं चलता। सब कुछ सबका होता है।

(२) हरअेक अपनी जरूरतके अनुसार पाता है और अपनी क्षमताके अनुसार काम करता है।

(३) घरके झगड़े घरमें ही निपटा लिये जाते हैं।

यही बात अितनी ही सफलताके साथ गांवोंमें भी चल सकती है:

(१) गांवकी सारी जमीन और संपत्ति पूरे गांवकी होनी चाहिये।

(२) हरअेकको—वह शिक्षित हो या अशिक्षित, स्त्री हो या पुरुष—अपनी शक्तिके अनुसार काम करना चाहिये और अपनी जरूरतके अनुसार लेना चाहिये।

(३) गांवके झगड़े गांवमें ही निपटने चाहिये।

दुनियाकी शान्तिके लिअे अिसकी आवश्यकता है। यह विज्ञानका भी तकाजा है। आधुनिक विज्ञान चाहता है कि अणुके लिअे अेक नियम और विश्वके लिअे दूसरा नियम नहीं हो सकता। विज्ञानने बताया है कि अणु भी अेक विश्व है और दोनोंके लिअे वही अेक नियम लागू होता है। अिसी तरह जो चीज व्यक्तिके लिअे सही है, वही सारी दुनियाके लिअे भी सही होनी चाहिये। बुद्ध कहते हैं:

अत्ता हि अत्तनो नाथो अत्ता हि अत्तनो गति।
तस्मा संयमयत्तानं अस्सं भद्रं व वाणिजो॥ (वही, ३८०)

(आत्मा ही आत्माका नाथ है, आत्मा ही आत्माकी गति है। अिसलिअे जिस तरह कोअी वणिक् भद्र अश्वका संयम करता है, अुसी तरह आत्माका संयम करो।)

बुद्धका यह संदेश किसी अेक देश, पंथ या संप्रदायके ही लिअे नहीं है, सारी मानव-जातिके लिअे है। ठेठ सत्यके मर्म पर अंगुली रखकर अुन्होंने अनन्त कालके लिअे अपना संदेश दिया है:

अक्कोधेन जिने कोधं, असाधुं साधुना जिने।
जिने कदरियं दानेन सच्चेन अलीकवादिनम॥ (वही, २२३)

(क्रोधको अक्रोधसे जीतो, दुष्टको साधुतासे जीतो, सूमको दानसे, और मिथ्याभाषीको सत्यसे।)

भूदान आन्दोलन* अिस सन्देशको कार्यान्वित करनेकी, अुसे प्राणवान् वस्तुस्थितिका रूप देनेकी कुंजी प्रदान करता है। यह काम लोगोंका है कि वे आलस्य छोड़कर खड़े हो जायं और अिस बातकी प्रतिज्ञा करें कि वे व्यक्तिशः और संघशः वैसा ही जीवन बिताकर जैसा कि बुद्ध और दूसरे पैगम्बरोंने हमें बितानेका आदेश किया है और जिसकी सूचना अब हमें विज्ञान दे रहा है, दुनियाकी रक्षा करेंगे। परिस्थिति गंभीर है और देर भयंकर सिद्ध होगी। बुद्धकी चेतावनी है:

* मैं यहां अिसकी अपेक्षा अधिक व्यापक 'सर्वोदय आन्दोलन' शब्दका व्यवहार करना पसन्द करूंगा। —म० प्र०

www.vinoba.in

अभित्थरेव कल्याणे पापा चित्तं निवारये।
दन्धं हि करोती पुञ्ञं पापस्मिं रमती मनो।। (वही, ११६)

(कल्याण-कार्य करनेमें शीघ्रता करो; पापसे चित्तका निवारण करो। आलस्यपूर्वक पुण्य करनेवालेका मन पापमें रमता है।)

अिस विषयमें बुद्ध और गांधीके देशवासियोंकी जिम्मेदारी औरोंसे बहुत ज्यादा है। आअिये, हम नये मूल्योंका निर्माण करें और भारतकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक रचनाको बदल डालें। मानवजातिको सत्य और अहिंसा, प्रेम और शान्तिका संदेश देनेमें हम कोअी प्रयत्न बाकी न रखें। हम अपनी मातृभूमिका मिशन पूरा करनेमें सफल हों, यही हमारी प्रार्थना होनी चाहिये।

(अंग्रेजीसे) सुरेश रामभाअी

हरिजनसेवक

२० अगस्त १९५५

मैं बी० सी० जी० के टीकेका विरोध क्यों करता हूं?*

अिस विषयकी मैं जितनी ज्यादा जांच करता हूं, अुतना ही ज्यादा मेरा यह विश्वास दृढ़ होता जाता है कि बी० सी० जी० के अिस सामूहिक आन्दोलनके पीछे सच्चे वैज्ञानिक आधारका अभाव है और वह नीमहकीमीसे ज्यादा कुछ नहीं है। लोगोंकी बहुत बड़ी संख्याके लिअे अुसका कोअी अुपयोग नहीं है और कितने ही लोगोंके लिअे वह नुकसानदेह भी है। बी० सी० जी० का आधार अिस कमजोर और अप्रदर्शित सिद्धान्त पर है कि शरीरके भीतर कृत्रिम रूपसे अुत्पन्न की गअी 'अेलर्जी' रोगके खिलाफ सुरक्षा है। अिसे प्रमाणका वह समर्थन प्राप्त नहीं है, जो कि वैज्ञानिक पद्धतिसे किसी सिद्धान्तको स्वीकार करनेसे पहले जरूरी होता है। जो अिसके खिलाफ प्रमाण देनेवाले हर मामलेका मुकाबला कर सकें, अैसे अिकरारों द्वारा अिसका बचाव किया जाता और अिसे मजबूत बनाया जाता है। यह स्वीकार कर लिया गया है कि जहां रोगकी फिरसे लगी हुअी छूत तीव्र होती है, वहां बी० सी० जी० अपनी कोअी शक्ति नहीं दिखा सकता। और यह बी० सी० जी० की प्रत्येक असफलताके लिअे स्पष्टीकरण हो सकता है। जिन मामलोंमें यह नुकसान करता है, वहां अिसका कारण रोगके शिकारकी 'नीची प्रतिरोध-शक्ति' बतायी जाती है। भारतमें बी० सी० जी० का जो सामूहिक आन्दोलन शुरू किया गया है, अुसमें नीमहकीमीकी सारी परिस्थितियां मौजूद हैं, बावजूद अिसके कि बाहरके सभ्य देशोंमें जहां कहीं अिसे आजमाया गया है वहां काफी सावधानीसे काम लिया गया है। भारतीय बालकों पर अुसी योजनाके आधार पर सामूहिक प्रयोग किया जा रहा है, जिसका युद्धसे बरबाद हुअे प्रदेशोंके लोगों और असभ्य पराधीन प्रजाओंके बीच अमल किया गया था।

केवल बी० सी० जी० योजनाका आधार ही वैज्ञानिक दृष्टिसे अपर्याप्त नहीं है, बल्कि विशाल पैमाने पर अुसे तेजीसे आगे बढ़ानेके लिअे जो प्रचार किया जाता है अुसमें भी नीमहकीमीके तरीकोंकी ही गंध आती है। सरकारकी ओरसे अक्सर यह कहा गया है और अखबारोंमें दोहराया गया है कि अिस वर्ष अितने लाख बालकोंको क्षयरोगके खतरेसे मुक्त कर दिया गया है और अगले दो वर्षके अन्त तक अितने लाख बालकोंको अिस खतरेसे मुक्त कर दिया जायगा। जिस आदमीको बी० सी० जी० के टीकेके बारेमें किये जानेवाले बहुत सीमित दावोंका स्मरण होगा वह देख सकता है कि अिस विषयमें सरकारी प्रचार गलतफहमी पैदा करनेवाला है, क्योंकि बालकको टीका लगानेके बाद दो वर्षसे अधिक अुसके रोगमुक्त रहनेका दावा नहीं किया जाता — और अुस सीमित अवधिमें भी बी० सी० जी० तीव्र प्रकारकी छूतमें काफी प्रतिरोध शक्ति नहीं दिखा पाता — और क्योंकि रोगमुक्तिकी अवधिको बढ़ानेके लिअे फिरसे टीका लगानेकी कोअी योजना नहीं है। सच पूछा जाय तो अिस बारेमें डॉक्टरोंकी राय स्पष्ट है कि बी० सी० जी० का टीका बार-बार लगवाना खतरनाक होगा।

यह सामान्य राष्ट्रीय महत्त्वका प्रश्न है और अैसी बात नहीं है, जिसे निष्णातोंमें मतभेद होने पर बहुमतकी रायके अनुसार निबटानेके लिअे छोड़ा जा सकता है। विज्ञानके साहसोंमें भिन्न रायें हो सकती हैं। जिस चीजका जनताके बहुत बड़े भाग पर असर नहीं पड़ता, अुसके बारेमें पैदा होनेवाले मतभेदको दूर करनेकी जिम्मेदारी वैज्ञानिकों पर छोड़ी जा सकती है; लेकिन अैसी स्थितिमें नहीं जब किसी सिद्धान्त पर लोगोंके शरीरोंको लाभ या हानिके लिअे छुआ जाता है।

मेरा विश्वास है कि भविष्यमें अेक दिन अैसा आयेगा जब बी० सी० जी० बेकार जाहिर कर दिया जायगा और वैज्ञानिक लोग अुसे त्याग कर भूल जायंगे। हमारे यहां भारत-सरकारका स्वास्थ्य-विभाग अिस अवैज्ञानिक साहस पर अितना जोर डाल रहा है, अिसलिअे अुसे छोड़नेमें थोड़ा समय लगेगा। अिस बीच सारे देशके बालकोंमें और अुनके अुत्तम भागमें, सामूहिक पैमाने पर, जानबूझ कर भयंकरसे भयंकर किस्मके जीवित कीटाणु प्रवेश कराये जा रहे हैं। कुछ अत्यन्त प्रसिद्ध वैज्ञानिकोंने अिस विषयमें गहरी शंकायें व्यक्त की हैं कि मानव शरीरमें दाखिल किये जानेवाले ये कीटाणु अगर अेकदम नहीं तो कुछ समय बाद क्या रूप ले सकते हैं और क्या क्या परिणाम अुत्पन्न कर सकते हैं। बी० सी० जी० का टीका लिये हुअे असंख्य लोगोंके कारण तथा आंधीके वेगसे चलनेवाले अिस सामूहिक आन्दोलनमें पैदा होनेवाले छूतके अनिवार्य मौकोंके कारण यह खतरा और बढ़ जाता है।

अिस सामूहिक आन्दोलनका अुद्देश्य बालकोंमें क्षयरोगको रोकनेका बताया जाता है। पहली बात तो यह है कि भारतमें क्षयसे मरनेवाले नौजवानोंके जो आंकड़े बताये जाते हैं वे सच्चे नहीं होते, बल्कि केवल अनुमानके आधार पर निकाले गये परिणाम होते हैं। दूसरी बात यह है कि यह रोग न तो कभी महामारीके रूपमें फैला और न भविष्यमें कभी फैलेगा, ताकि अैसे जहरका — जो पूरी तरह निर्दोष सिद्ध नहीं कर दिया गया है — सामूहिक पैमाने पर टीका लगाया जाना अुचित ठहराया जा सके। अिसके सिवा, अिस टीकेके लिअे जो दावा किया जाता है वह निश्चित ही अैसी रोगमुक्ति नहीं है जिस पर पूरा भरोसा किया जा सके, और वह भी दो वर्षके लिअे ही मिलती है। अिन सब बातोंका विचार करते हुअे हम अिस नतीजे पर पहुंचते हैं कि यह आन्दोलन बिलकुल अनुचित है।

बी० सी० जी० के सामूहिक आन्दोलनकी अेक सबसे बुरी बात यह है कि अिसमें अैसे व्यक्ति, जिनके शब्दोंका आम जनता पर प्रभाव पड़ता है, निरन्तर बहुसंख्यक लोगोंमें रोगका भय पैदा करनेका प्रयत्न करते हैं। भय अैसे लोगोंमें रोगका प्रतिरोध करनेकी शक्तिको काफी घटा देता है, जिन्होंने अभी तक वही

* यह पुस्तिकाके रूपमें प्रकाशित अुस संग्रहकी प्रस्तावना है, जिसमें प्रसिद्ध डॉक्टरोंके कुछ महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिये गये हैं। यह पुस्तिका 'अिन्डियन अेक्स्प्रेस', माअुन्ट रोड, मद्राससे मुद्रित हुअी है।

www.vinoba.in

हुअी छूतका हिम्मतसे सामना किया है। अिस आन्दोलनका अेक दूसरा सामान्य परिणाम अैसे अुपायोंकी अुपेक्षामें आता है, जो वास्तवमें क्षयरोग पर नियंत्रण रखनेमें बहुत मददगार हो सकते हैं।

मैं आधुनिक 'पश्चिमी' चिकित्सा या आधुनिक विज्ञानके खिलाफ नहीं हूं। बी० सी० जी० का आधुनिक पाश्चात्य चिकित्सा-शास्त्रसे कोअी संबंध नहीं है। सच पूछा जाय तो आम तौर पर जिसे आधुनिक चिकित्सा कहा जाता है अुसके बनिस्बत बी० सी० जी० की होमियोपैथीके सिद्धान्तसे अधिक समानता है। वह अैसे विश्वासके अनुसार काम करता है, जो होमियोपैथीसे बहुत मिलता-जुलता है। वह यह है कि रोगोंके अिलाजके लिअे मन्द मात्रामें वही चीजें शरीरके अन्दर दाखिल करनी चाहिये, जो रोग पैदा करती हैं। फर्क अितना ही है कि होमियोपैथीमें माननेवाला चिकित्सक शरीरमें अैसी चीज दाखिल नहीं करता जो भीतर जाकर बढ़ती है, जब कि बी० सी० जी० का डॉक्टर शरीरके अन्दर बढ़नेवाले जीवित कीटाणु दाखिल करता है, जो कभी शरीरसे बाहर नहीं निकलते और अिस अिरादेसे ही दाखिल किये जाते हैं कि वे शरीरमें हमेशा बने रहें।

जानकार पाठक मुझे यह कहनेके लिअे क्षमा करेंगे कि बी० सी० जी० किसी रोगको अच्छा नहीं करता। अुसके बारेमें दावा यही किया जाता है कि कुछ लोगोंमें वह थोड़े समय तक क्षयको रोकनेका काम कर सकता है। यह बात अिसीलिअे कहनी पड़ती है कि मुझे अैसे कितने ही सुशिक्षित लोगोंसे मिलनेका मौका आया है जो पूछते हैं कि मैं अैसी चीजका विरोध क्यों करता हूं, जो बीमारीका अिलाज करती है! बी० सी० जी० किसी बीमारीको अच्छा नहीं करता। वह अिसके लिअे शरीरमें दाखिल नहीं किया जाता।

नीमहकीमी बुरी चीज है, भले वह आधुनिक हो या प्राचीन कालकी हो। पुराने समयकी नीमहकीमीसे निबटना आसान है, लेकिन नये जमानेकी नीमहकीमीसे निबटना बड़ा कठिन है, क्योंकि वह अपने मतलबके लिअे आधुनिक चिकित्सा-शास्त्रके शब्दोंका अुपयोग करती है और अुसकी कार्य-पद्धतियोंको अपना लेती हैं। 'संपूर्ण असत्यका मुकाबला किया जा सकता और अुसके साथ खुले तौर पर झगड़ा किया जा सकता है। लेकिन अैसे असत्यसे झगड़ना बड़ा कठिन होता है जो अर्ध-सत्य होता है।'

अैसा सिद्धान्त खोजा गया है जो सार्वभौम नहीं है, परंतु अैसे मामलों पर अुसे लागू करनेकी अिच्छा रखी जाती है जहां वह लागू नहीं हो सकता; और गलती बताअी जाती है तो अुसका विरोध किया जाता है। बी० सी० जी० रोगमुक्तिके अुस सिद्धान्तका ही विस्तार है, जो किसी रोगको पैदा करनेवाले कीटाणुओंको ही बाहरसे शरीरमें दाखिल करनेके पीछे रहता है। अिसके पीछे अुद्देश्य यह रहता है कि अैसा करनेसे मानवशरीर रोगके कीटाणुओंसे अपनी रक्षा करनेके लिअे अुसी तरह अुत्तेजित किया जा सकता है, जिस तरह स्वाभाविक रूपमें छूत लग जाने पर शरीर करता देखा जाता है। अिस सिद्धान्तको क्षयरोग पर लागू करना गलत है, क्योंकि यह जानी हुअी बात है कि क्षयकी छूतसे शरीरमें कोअी रक्षक पदार्थ अुत्पन्न नहीं होता। लेकिन अिस कठोर सत्य और रोगमुक्ति पैदा करनेकी पाश्चरकी पद्धति लागू करनेके खिलाफ अुठाअी जानेवाली अजेय आपत्तिके साथ लड़ते हुअे, बी० सी० जी० का हिमायती केवल छूतके खिलाफ ठोस बचावके रूपमें जहर दाखिल करनेसे शरीरमें अुत्पन्न होनेवाली 'अेलर्जी' या अतिशय संवेदनशीलता पर निर्भर करता है और अिसके खातिर हमें टीकेके सारे अज्ञात खतरोंको स्वीकार करनेको कहता है। और संवेदनशीलता भी अैसी जो निश्चित रूपमें केवल दो वर्ष तक ही टिकती है। बी० सी० जी० के पक्षमें अंतिम दलील केवल आंकड़ा-संबंधी ही है, जो अच्छेसे अच्छे मूल्यांकन करनेवालोंके अनुसार अनिर्णयात्मक है। केवल टीका लगाये गये लोगोंकी संख्या, जिसके पीछे रोगमुक्ति संबंधी परिणामोंके किसी सुप्रमाणित निरीक्षणका बल नहीं होता, आंकड़ोंकी सच्ची दलील प्रस्तुत नहीं करती; वह केवल टीका लगानेका काम करनेवाली संस्था या संगठनकी शक्ति और साधनोंका ही सबूत देती है।

मैं नम्र भावसे कहता हूं कि बी० सी० जी० के आन्दोलनके पीछे यही नीमहकीमी है। मैं कोअी आधुनिक चिकित्सा-शास्त्रका निष्णात नहीं हूं। लेकिन मैं जिन नतीजों पर पहुंचा हूं, अुनका आधार पहलेसे खड़े कर लिये गये भयों या शंकाओं पर नहीं है, बल्कि सभ्य दुनियाके अत्यन्त विख्यात और निष्णात डॉक्टरोंकी निश्चित घोषणाओं पर है। स्वास्थ्य-मंत्रालयने जिन भारतीय डॉक्टरोंको बी० सी० जी० का आन्दोलन चलाने और अुसका प्रचार करनेके लिअे भरती किया है, अुनमें से बड़ेसे बड़े डॉक्टर भी अुन डॉक्टरों जैसे प्रख्यात और निष्णात नहीं हैं, जिनके निरीक्षणों और मतोंके आधार पर मैं अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि यह क्षयके जीवित कीटाणुओंका टीका लगानेका सामूहिक आन्दोलन गलत है और बन्द कर दिया जाना चाहिये।

हमारे देशके सारे अखबार अैसे किसी आदमीकी बातोंको ज्यादा जगह देनेके लिअे बहुत राजी नहीं होते, जो सरकार द्वारा चलाये जानेवाले आन्दोलनका विरोध करता है, हालांकि अुनका विषय अधिकसे अधिक लोककल्याणका महत्त्व रखता है और अुनका अुद्देश्य किसी सरकारी नीतिको आगे बढ़ानेका नहीं बल्कि सत्य तक पहुंचनेका होता है। जब अखबार अुदार बन कर लिखित आलोचनाओं या अुस विषयकी चर्चा करनेवाले भाषणोंकी रिपोर्ट छापनेके लिअे तैयार होते हैं, तब भी वे अुस विषयके सारे निष्णातोंके मतोंके पूरे अुद्धरण छापनेमें, आवश्यक होनेके कारण, असमर्थ रहते हैं। यह पुस्तिका अिस कमीको पूरी करनेके लिअे प्रकाशित की गअी है। यहां मैं प्रसिद्ध डॉक्टरों और चिकित्सा-शास्त्रियोंके कुछ महत्त्वपूर्ण वक्तव्य अिकटठे करके पाठकोंके सामने रखता हूं। मैंने अपनी तरफसे अुतनी ही बात कही है जितनी अिन अुद्धरणोंकी प्रासंगिकताको समझानेके लिअे आवश्यक है।

(अंग्रेजीसे) **च० राजगोपालाचार्य**

हमारा नया प्रकाशन

सर्वोदय

लेखक: **गांधीजी**; संपा० **भारतन् कुमारप्पा**

गांधीजीके मतानुसार सर्वोदयका अर्थ आदर्श समाज-व्यवस्था है। अिस पुस्तकमें सर्वोदयकी चर्चा की गअी है और यह बताया गया है कि वह कैसे सिद्ध किया जा सकता है। अिसका अुद्देश्य संसारके सामने गांधीजीका शांति और स्वतंत्रताका सन्देश पेश करना है।

कीमत २-८-० डाकखर्च ०-१२-०

विवेक और साधना

लेखक: **केदारनाथ**

संपादक

किशोरलाल मशरूवाला; रमणीकलाल मोदी

कीमत ४-०-० डाकखर्च १-२-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

शिक्षा और योजनाबद्ध विकास

श्री टी० बलोग नामक अेक ब्रिटिश अर्थशास्त्रीने हमारी दूसरी पंचवार्षिक योजनाकी समीक्षा की थी; अुनकी समीक्षाके निष्कर्ष हिन्दुस्तान टाअिम्स, दिल्लीके ता० ३०–७–'५५ के अंकमें प्रकाशित हुअे हैं। ये निष्कर्ष कअी दृष्टियोंसे बहुत मननीय हैं। मैं यहां अुनमें से केवल अेकका अुल्लेख करता हूं जो मुझे सबसे ज्यादा सूझपूर्ण और विचारणीय मालूम होता है:

"अिस बातको बहुत ही आश्चर्यजनक कहा जायगा — खासकर अिसलिअे कि लेखक-जन शिक्षा-क्षेत्रके प्रसिद्ध सदस्य हैं — कि पेश किये गये लेखोंमें अेक भी अैसा नहीं है जो बताता हो कि अिन प्रस्तावोंको कार्यान्वित करनेके लिअे न केवल शिक्षामें तत्काल दूरगामी सुधार करने होंगे बल्कि शासनिक नौकरियोंके लिअे की जानेवाली भरतीमें भी बुनियादी परिवर्तन अपेक्षित होगा। शिक्षाकी सारी रीति-नीति अभी बदली जानी चाहिये तब कहीं वर्षों बाद अुसका लाभ प्राप्त होगा। मेरा खयाल है कि यह चीज योजनाकी सफलताके लिअे अेक गंभीरतम खतरा है।"

यह आलोचना सही और अुचित है क्योंकि हम अपने दुःखद अनुभवसे जानते हैं कि हमारे देशमें प्रचलित शिक्षा-संबंधी विचार राष्ट्रीय शिक्षण और सामाजिक तथा आर्थिक पुनर्निर्माणके बीच जो गहरा संबंध है अुसकी अुपेक्षा करता है।

श्री बलोगने अपनी समीक्षामें अिस विषयकी चर्चा अेक जगह फिर अुठायी है। वहां भी अुन्होंने जो बात कही है वह भी अुतनी ही महत्त्वपूर्ण है:

"शिक्षा, खेल-कूद, सामाजिक सुरक्षा और कल्याण आदिके विषयमें जो कुछ कहा गया है और स्वास्थ्य-सुधारके लिअे खर्चमें जैसी भारी वृद्धि करना सोचा गया है अुसे देखकर पाठकके मन पर यह असर हुअे बिना नहीं रहता कि योजनाके लेखकने अिस बातका मामूली विचार भी नहीं किया है कि यदि सामूहिक अुपभोगके अिन सारे क्षेत्रोंमें जीवन-मानको अुठानेके लिअे सचमुच प्रामाणिक प्रयत्न किया गया तो अुससे राज्य पर कितना अतिरिक्त भारी बोझ आ पड़ेगा। अुदाहरणके लिअे, जहां शैक्षणिक प्रगतिका विचार करते हुअे योजना कहती है कि 'योग्यताके आधार पर हरअेक विद्यार्थीको प्रत्येक स्तर पर और अिस तरह अधिकाधिक विद्यार्थियोंको पर्याप्त शैक्षणिक और जीवन-खर्च मिलना चाहिये, ताकि वह अुच्चतम शिक्षा पा सके', वहां यह प्रश्न अुठता है कि अिस जगह अैसी चेतावनी जरूर दी जानी चाहिये थी कि **सामान्य** शिक्षाके बजाय **विशेष** शिक्षणकी आवश्यकता पर जोर दिया जाना चाहिये, खासकर अिसलिअे कि भारतमें प्रचलित सामान्य शिक्षण टेक्निकल विषयोंकी और अुद्योगोंकी तालीमसे कोअी संबंध नहीं रखता। नव-शिक्षितोंको किन दिशाओंमें — किन कार्योंके लिअे तैयार करना है, अिस विषयमें क्या भारत-सरकार कुछ नहीं करना चाहती? अभी तक जो परिणाम आये हैं वे अिस दावेको सिद्ध नहीं करते (ठीक जिस तरह कि वे ब्रिटेनमें भी अुसे सिद्ध नहीं करते) कि हमें शिक्षाके द्वारा क्लासिक्सके अध्ययनसे अपने आप अुत्पन्न होनेवाली अुच्चतर योग्यता ही चाहिये और विशेष कुछ नहीं, यह योग्यता किसी भी सवालको बिना किसी तैयारीके अेक क्षणमें हल करनेका रास्ता ढूंढ़ लेगी।"

क्या हमारे योजनाकार अभी भी यह महसूस करेंगे कि जिसे सचमुच विकास कहा जा सके, अैसे किसी भी कार्यक्रमके लिअे पहले जो बुनियादी सुधार होना चाहिये वह शिक्षाका होना चाहिये, और यह कि अुत्पादक श्रम या अुद्योग और पड़ोसकी सेवाके जरिये जनताके साथ सीधे सामाजिक संपर्कके द्वारा शिक्षामें परिवर्तनके लिअे गांधीजीने जो मार्ग दिखाया था वह हमारी समस्त जनताको बदल सकता है और अुन्हें न केवल अपनी टूटी हुअी राष्ट्रीय यानी ग्रामीण अर्थ-व्यवस्थाका बल्कि अुनके सामाजिक और राजनीतिक जीवनका पुनर्निर्माण करनेके लिअे तैयार कर सकता है और अुनमें नया बल और आत्मविश्वास पैदा कर सकता है।

५–८–'५५ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

रेलोंमें विशाल पैमाने पर भ्रष्टाचार

रेलवे भ्रष्टाचार जांच कमेटीने ११ जुलाअीको रेलवे-मंत्रीके सामने अपनी रिपोर्ट पेश कर दी। अखबारोंमें जो अुसके संक्षिप्त वर्णन प्राप्त हुअे हैं, अुन परसे यह आसानीसे देखा जा सकता है कि यह रिपोर्ट न केवल रेलवे-तंत्रके गहरे अध्ययनको ही बताती है, बल्कि हमारी सामाजिक और व्यावसायिक नैतिकता तथा अच्छी नागरिकताकी भावनाके विभिन्न पहलुओं पर भी थोड़ेमें प्रकाश डालती है।

रेलवे सम्बन्धी भ्रष्टाचारकी पृष्ठभूमिकी जांच करते हुअे रिपोर्ट कहती है कि "रेलोंमें फैला हुआ भ्रष्टाचार कोअी नअी चीज नहीं है। कंपनीकी व्यवस्थाके प्रारंभ कालमें स्टेशनके कर्मचारियोंकी तनखाहें बहुत कम थीं और जनतासे वे लोग जो बख्शिश अिकट्ठी करते थे अुसकी ओर कोअी ध्यान नहीं दिया जाता था। अिस तरहका भ्रष्टाचार देशमें लगभग सर्वत्र फैला हुआ था।

"दूसरे विश्वयुद्धके जमानेमें अमुक चीजोंको पहला स्थान देनेकी जो पद्धति दाखिल की गअी, अुसके कारण और यातायातकी सुविधाओंका अत्यन्त अभाव होनेके कारण भ्रष्टाचारके नये रूपोंको जन्म मिला, जो युद्ध बन्द हो जानेके बाद भी जारी रहे, क्योंकि यातायातकी स्थिति पहले जैसी ही असन्तोषजनक बनी रही।"

कमेटी कहती है कि यह भी नहीं भूलना चाहिये कि किसी भी सरकारी विभागमें भ्रष्टाचार मिटानेकी पहली आवश्यक शर्त यह है कि पुलिसके कर्मचारी कार्यक्षम और अीमानदार हों, जिन्हें गुनाहोंका पता लगाने और अुन्हें समझनेकी नयीसे नयी और अुत्तम वैज्ञानिक पद्धतिकी तालीम दी गअी हो।

कमेटीका कहना है, "किसी सरकारी विभागके लिअे यह कठिन है कि वह अपने विशेष काम भी करे और साथ ही अपने कर्मचारियोंके भीतर छिपे समाज-द्रोही तत्त्वोंका पता लगाकर अुन्हें अच्छी तरह सजा भी दे। अैसा करनेके लिअे अुसके पास आवश्यक तंत्र नहीं होता।"

कमेटीकी रायमें, यह सच है कि नागरिकताकी सच्ची भावनाका अभाव और व्यापारियोंमें नैतिकताका अभाव भी कुछ हद तक रेलवे कर्मचारियोंमें भ्रष्टाचारको अुत्तेजन देनेके लिअे जिम्मेदार है।

कमेटी कहती है, "जब तक लोकहित और भले नागरिकके नाते अपने कर्तव्यकी अुपेक्षाकी गहरी जड़ जमाअी हुअी वृत्तिमें परिवर्तन नहीं होता, तब तक सरकारी कर्मचारियोंमें फैले हुअे भ्रष्टाचारको मिटाना कठिन होगा।"

अिस प्रश्नको मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे देखनेका अनुरोध करते हुअे कमेटी कहती है कि "भ्रष्टाचारकी समस्या रेलों तक ही सीमित नहीं है। वह सारे सरकारी विभागोंमें समान रूपसे मौजूद है और अुसने गहरी जड़ जमा ली है। अिसलिअे अिस

www.vinoba.in

बुराओंको मिटानेके लिअे यह जरूरी है कि सारे सम्बन्धित लोगोंका दृष्टिकोण बदले।" स्वराज्य-प्राप्तिके बादसे रेलोंका कार्य पूरी तरहसे बदल गया है, अिसलिअे "जो लोग अिस विशाल रेलवे तंत्रको चलाते हैं अुनमें और रेलोंका अुपयोग करनेवाली जनताके रवैयेमें भी आवश्यक परिवर्तन होना चाहिये।" हालांकि अिस समस्याके बारेमें लोग दिनोंदिन अधिक जाग्रत हो रहे हैं, फिर भी कमेटीके कथनानुसार अभी तक अिस सम्बन्धमें जो कदम अुठाये गये हैं अुनके सन्तोषप्रद परिणाम नहीं आये हैं।

रेलोंमें फैले हुअे भ्रष्टाचारकी समस्याकी, अुसकी विशाल पृष्ठभूमिके आधार पर, जांच करनेके बाद कमेटीने विशेष मुद्दों पर अनेक सुझाव दिये हैं और सिफारिशें पेश की हैं। कमेटीका कथन है कि अिन सुझावों और सिफारिशों पर अमल करनेसे अैसा अनुकूल वातावरण पैदा होगा, जिससे रेलवे तंत्रके कर्मचारी अपना कर्तव्य अीमानदारीसे भलीभांति पूरा कर सकेंगे।

कमेटीके अनुसार यातायातकी सुविधाओंकी तंगी अेक मुख्य कारण है, जो भ्रष्टाचारको प्रोत्साहन देती है। अिसलिअे यह जरूरी है कि दूसरी पंचवर्षीय योजनामें अैसी समुचित व्यवस्था की जाय, जिससे न केवल यातायातकी कमीको ही पूरा किया जा सके, बल्कि काफी अतिरिक्त साधन भी तैयार किये जा सकें, ताकि रेलवे तंत्र यातायातकी वर्तमान मांगोंको और योजना-कालमें बढ़नेवाली अर्थ-रचनाकी अतिरिक्त मांगोंको भी पूरा कर सके।

कमेटी कहती है कि हालांकि अधिकतर भ्रष्टाचार मालके यातायातकी व्यवस्थासे सम्बन्ध रखनेवाली शाखामें फैला हुआ है, लेकिन यात्रियोंके टिकटों और अुनके सामानकी व्यवस्थासे सम्बन्ध रखनेवाली शाखा भी अिस बुराअीसे मुक्त नहीं है। यहां भी पिछले युद्धने पहलेसे चली आअी बुराअीको बढ़ा दिया था। पिछले कुछ समयसे अिस स्थितिमें थोड़ा सुधार हुआ है, फिर भी काफी बड़े पैमाने पर आज भी भ्रष्टाचार जारी है।

कमेटीने अपनी रिपोर्टमें यात्रियोंके टिकटों और अुनके सामानकी व्यवस्था करने, बर्थ सुरक्षित करने, टिकटोंके अुपयोगमें धोखेबाजी करने, अपढ़ यात्रियोंको परेशान करने तथा बिना टिकट यात्रा करनेवालोंके सम्बन्धमें जो अनेक प्रकारका भ्रष्टाचार प्रचलित है, अुसकी थोड़े विस्तारसे चर्चा की है।

रिपोर्टमें अिस बातकी सिफारिश की गअी है कि रेलवेके जो कर्मचारी गरीब और अपढ़ यात्रियोंको परेशान करते हैं, अुनके खिलाफ सख्त कार्रवाअी की जाय।

रिपोर्टमें अेक स्वतंत्र प्रकरण रेलवे तंत्रके भीतरी कामकाजकी चर्चा करता है, क्योंकि कमेटीकी रायमें रेलवे कर्मचारियोंके जनताके साथके व्यवहारमें जो भ्रष्टाचार चल रहा है, अुसका घनिष्ठ सम्बन्ध तंत्रके भीतर चल रहे कर्मचारियोंके आपसी भ्रष्टाचारके साथ है। अैसा भ्रष्टाचार सामान्यतः नियुक्तियों, तरक्कियों, ट्रेनिंग, वेतन-वृद्धि, छुट्टियों, मुसाफिरीके पास, बदलियों, सिलेक्शन बोर्ड, रेलवेके डाक्टरी विभागों, तथा रेलवेके सामान तथा मजदूरोंके दुरुपयोगसे सम्बन्ध रखता है।

कमेटीका कहना है कि अक्सर सरकारके रेलवे पुलिस अधिकारी भी अिस भ्रष्टाचारकी बुराअीमें फंसे होते हैं।

रिपोर्टके कअी पैरोंमें अुन तरीकों और रास्तोंकी चर्चा की गअी है, जिन्हें अपना कर रेलवे कन्सल्टेटिव कमेटी भ्रष्टाचारकी बुराअीको जड़मूलसे खतम करनेमें निश्चित भाग ले सकती है। रिपोर्टमें यह सिफारिश की गअी है कि अिन कमेटियोंका कार्य-क्षेत्र बढ़ा दिया जाना चाहिये, ताकि वे रेलवे कर्मचारियोंके व्यक्तिगत मामलोंसे संबंध रखनेवाली सार्वजनिक हितकी सारी बातोंका विचार कर सकें।

कमेटीने अिस बात पर जोर दिया है कि धारासभाओंके सदस्योंको चाहिये कि वे रेलवे कर्मचारियोंके व्यक्तिगत मामलोंसे सम्बन्धित तरक्कियों, तबादलों, सजाओंको रद्द कराने या घटाने वगैराके लिअे मंत्रियों या सरकारी अधिकारियोंके पास सिफारिशें न भेजें। सजाओंके मामलोंमें अगर धारासभाके सदस्योंको लगे कि किसीके साथ अन्याय हुआ है, तो अैसे मामले वे रेलवे-मंत्रीके पास पुनर्विचारके लिअे भेज सकते हैं। नियुक्तियों, तबादलों, और तरक्कियोंसे संबंध रखनेवाले प्रश्न रेलवे-तंत्रके विचाराधीन छोड़ दिये जायं। किसी भी परिस्थितिमें धारासभाके सदस्योंको अधिकारियोंके पास पक्षपात या कृपाके लिअे नहीं पहुंचना चाहिये।

अिस संक्षिप्त वर्णनसे पाठक देखेंगे कि यह पुरानी बीमारीका मामला है, जो बहुत बड़े पैमाने पर फैली हुअी है। अिसलिअे अिसका चारों तरफसे लम्बा और सावधानीपूर्वक अिलाज करनेकी जरूरत है। अिसमें केवल पुलिस और रेलवे विभागको ही भाग नहीं लेना है, बल्कि व्यवसाय और अुद्योग विभाग, रेलवे कर्मचारी संघों और विभिन्न प्रकारसे रेलोंका अुपयोग करनेवाले लोगोंको भी बड़ी संख्यामें हाथ बंटाना चाहिये। ये सब मिलकर प्रयत्न करें तो ही हमारी समाज-व्यवस्थामें गहरी पैठी हुअी यह बुराअी जड़से दूर हो सकती है।

२८-७-'५५ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

खादी बोर्डकी द्वितीय पंचवार्षिक योजना

खादी और ग्रामोद्योगोंके लिअे अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्डने दूसरी पंचवार्षिक योजनाकी दृष्टिसे जो विकास-कार्यक्रम तैयार किये हैं, अुनमें कुल मिलाकर ३१७.०५ करोड़ रुपयेकी पूंजी खर्च होगी, ७५.४५ लाख लोगोंको पूरा काम-धंधा दिया जायगा और योजनाकी अवधिके अन्त तक २,९२२.२१ करोड़ रुपयेकी वस्तुओंका अुत्पादन होगा।

ये तथ्य आज (५-८-'५५) शामको वर्धामें बोर्डका तीन-दिन-व्यापी अधिवेशन शुरू हुआ तब प्रकाशमें आये। बोर्डकी तैयार की हुअी योजना अुद्योगोंको दो श्रेणियोंमें बांटती है:

(१) वे अुद्योग जिनके लिअे अुत्पादनका सम्मिलित कार्यक्रम रहेगा; और

(२) संभावनाओंकी खोजकी दृष्टिसे शुरू किया जा रहा विकास-कार्यक्रम।

पहली श्रेणीके विकास-कार्यक्रमों पर खर्च होनेवाली पूंजी अनुमानतः २९२.५० करोड़ होगी और अुनसे २,८९०.९ करोड़ रुपयेकी वस्तुओंका अुत्पादन होगा। दूसरी श्रेणीके अुद्योगों पर १६.३६ करोड़ रुपयेकी पूंजी खर्च होगी और २३.३० करोड़ रुपयोंकी वस्तुओंका अुत्पादन होगा। दूसरे शब्दोंमें, पांच वर्षोंमें ३१७ करोड़ रुपयेकी पूंजी खर्च होगी और २,९२२.२१ करोड़ रुपयोंका अुत्पादन होगा।

पूंजी और अुत्पादनका अनुपात

बोर्डकी योजनामें दी गयी सामग्रीके विश्लेषणसे प्रगट होता है कि सारे ग्रामोद्योगोंके लिअे पूंजी और अुत्पादनका अनुपात १ : ९.२२, और पहली श्रेणीके अुद्योगोंके लिअे १ : ९.९१ तथा दूसरे अुद्योगोंके लिअे १: १.४२ होगा। सारे विकास-कार्यक्रमोंकी दृष्टिसे अनुमानतः प्रति व्यक्ति ४२० रुपयेकी पूंजी खर्च होगी, अुत्पादनकी कीमत ३,८७३ रुपये होगी और प्रति व्यक्ति आय ९३३ रुपये होगी।

बोर्ड द्वारा तैयार किये गये अिस कार्यक्रमका आर्थिक और सामाजिक महत्त्व अिस बातमें है कि वह लोगोंको काम-धंधा

www.vinoba.in

देगा, आयका समान वितरण करेगा और साथ ही कामकी परिस्थितियोंमें तथा कर्ज लेने, माल रखने और बेचने आदिमें सुधार होगा। ये सब लाभ आगे आनेवाली पंचवार्षिक योजनाओंमें अुत्पादनकी बेहतर पद्धतियोंके विकासकी दृष्टिसे आवश्यक क्रमिक परिवर्तनके लिअे सुदृढ़ नींवका निर्माण करते हैं।

अुपर्युक्त ३१७.०५ करोड़ रुपयेके पूंजी खर्चमें ६६.२२ करोड़ रुपये विकास पर खर्च होंगे, १८६.९१ करोड़ रुपये कर्जमें दिये जायंगे, तथा ६०.११ करोड़ रुपये संबंधित अुद्योगोंकी व्यवस्था और संघटन पर तथा तालीम-केन्द्रों, शोध-संस्थाओं और सघन कार्य-क्षेत्रोंके लिअे आवश्यक स्थायी साधन-सामग्री जुटाने पर खर्च होंगे।

बोर्डके अिन कार्यक्रमोंके सफल सम्पादनके लिअे कैसी परिस्थितियां चाहिये और कैसी नीतियां आवश्यक होंगी अिनका विचार अेक अतिरिक्त विवृत्ति-पत्रमें किया गया है जो कहता है:

संघटन

"विकास कार्यक्रमको समयानुसार कार्यान्वित करनेके लिअे बोर्ड अुत्पादनकी जिम्मेदारी विविध राज्योंके क्षेत्र-विस्तार, अुक्त क्षेत्रमें अमुक अुद्योगके परिमाण, और वहां प्राप्त व्यवस्था तथा संघटनकी मशीनरीके अनुसार राज्योंको ही सौंपना चाहता है। दूसरे शब्दोंमें बोर्डकी मुख्य जिम्मेदारी विविध प्रयत्नोंके संघटनकी और आवश्यकताके अनुसार आर्थिक और टेकनिकल मदद तथा मार्ग-दर्शन देनेकी रहेगी; जब कि कार्यक्रमको कार्यान्वित करनेकी जिम्मेदारी ज्यादातर राज्य-बोर्डोंकी होगी। अिसके सिवा, बोर्ड समूह-विकास-प्रशासनकी सलाहसे हरअेक क्षेत्रको अुत्पादनका निश्चित कोटा भी बांट देना चाहता है ताकि ये विकास-कार्यक्रम बोर्डके जिन अुद्देश्योंको पूरा करनेके लिअे बनाये गये हैं अुनका सम्पादन आसानीसे हो सके। अिसी तरह और अिसी अुद्देश्यको ध्यानमें रखकर बोर्ड अमुक क्षेत्रकी स्वावलंबन साध सकनेकी क्षमताके आधार पर सम्पूर्ण विकासकी दृष्टिसे चुने गये सघन कार्य-क्षेत्रोंके लिअे भी अुत्पादनके निश्चित कोटा तय कर देनेकी बात सोचता है। अिस तरह, विविध विकास-कार्यक्रमोंको कार्यान्वित करनेके लिअे बोर्डकी सोची हुअी योजना यह है कि प्रत्येक राज्यको अुससे अपेक्षित अुत्पादनका कोटा बता दिया जाय, सामूहिक विकास योजनायें विविध प्रयत्नोंको सहकारपूर्वक चलानेकी सीधी जिम्मेदारी अुठायें, तथा शोध और तालीमकी तथा जहां आवश्यक हो वहां अुत्पादनके मर्यादित कार्यक्रमोंकी व्यवस्था की जाय।

नीति-संबंधी आवश्यकतायें

बोर्डके मातहत चलाये जा रहे अुद्योगोंके अिन विकास-कार्यक्रमोंकी सफलता बड़ी हद तक सामान्यतः सारे आर्थिक विकास और विशेषतः ग्रामोद्योगोंके विकासका नियंत्रण करनेवाली नीतियोंमें अुपयुक्त परिवर्तन करने पर निर्भर होगी। योजना कमीशनने अपनी रिपोर्टमें बड़े अुद्योगोंके साथ-साथ ग्रामोद्योगोंके विकासके लिअे निम्नलिखित अेक या अधिक कदम अुठानेकी सिफारिश की थी:

(१) अुत्पादनके क्षेत्र सुरक्षित कर दिये जायं;

(२) बड़े अुद्योगोंकी अुत्पादन-क्षमताका विस्तार न किया जाय;

(३) बड़े अुद्योगों पर सेस (कर) लगाया जाय;

(४) ग्रामोद्योगोंको कच्चा माल मुहैया करनेकी व्यवस्था की जाय; और

(५) शोध तथा तालीम आदिके लिअे सम्मिलित प्रयत्न हो।

बोर्डने अपने विकास-कार्यक्रमोंमें प्रत्येक अुद्योगके बाबत सरकारको किन नीतियोंका पालन करना चाहिये अिसका ब्यौरा भी सूचित किया है। अुसकी सूचनायें तत्त्वतः योजना-कमीशनकी पिछली सिफारिशोंके अनुरूप ही हैं लेकिन अुनमें साथ-साथ यह भी बताया गया है कि सम्मिलित अुत्पादनवाले प्रत्येक अुद्योगमें ग्राम-सेक्टरको अुत्पादनका कितना हिस्सा दिया जाय। अिसके सिवा अुनमें समान कीमतकी नीतिका पालन करनेकी आवश्यकता पर जोर दिया गया है; यह नीति यों सम्मिलित अुत्पादन कार्यक्रमकी स्वीकृतिमें अन्तर्हित ही है।

समान कीमतकी नीति

यद्यपि योजना कमीशनने विविध बड़े अुद्योगों और अुनसे सम्बद्ध ग्रामोद्योगोंके लिअे सम्मिलित अुत्पादन कार्यक्रम रचनेकी सिफारिश की थी, लेकिन अुसने अिसके लिअे जो अुपाय सुझाये थे अुन्हें सरकारने न तो पूरी तरह स्वीकार किया और न पूरी तरह कार्यान्वित किया। फल यह हुआ कि ग्रामोद्योगोंकी सफलताके लिअे जो परिस्थितियां चाहिये, वे पैदा नहीं हो सकीं। अेक ओर तो सरकारने बड़े अुद्योगोंकी अुत्पादनकी क्षमताके विस्तारको हमेशा रोका नहीं और कपड़ेके अुत्पादनको छोड़कर दूसरे किसी धंधेमें ग्रामोद्योगोंके पक्षमें अुत्पादनका क्षेत्र सुरक्षित नहीं किया; दूसरी ओर अुसने ग्रामोद्योगोंको जो आर्थिक मदद दी और बड़े अुद्योगों पर जो सेस लगाया अुनसे विविध अुद्योगोंके अिन दो विभागोंके बीच चलनेवाली प्रतियोगिता बंद नहीं हो सकी। सम्मिलित अुत्पादन कार्यक्रम निर्धारित करनेका मतलब ही यह है कि बड़े अुद्योगों और तत्सम्बन्धी ग्रामोद्योगोंको अेक अिकाअी मानकर अुत्पादनकी नीति तय की जाय, अमुक अुद्योगके दोनों सेक्टरोंकी अुत्पादन-क्षमता आंकी जाय, और प्रत्येकको अुत्पादनका निश्चित हिस्सा सौंप दिया जाय। अुत्पादक प्रयत्नकी सर्वग्राही योजना और दोनों सेक्टरोंमें निश्चित अुत्पादनकी जिम्मेदारीका बंटवारा करना है तो अेक ही अुद्योगकी विविध शाखाओंमें कोअी प्रतियोगिता नहीं होनी चाहिये और तदर्थ दोनोंमें समान स्तरकी वस्तुओंका मूल्य समान ही होना चाहिये। तो अिस दृष्टिसे बोर्डने योजना कमीशनकी पिछली सिफारिशोंमें दो सिफारिशें — जो अुनमें अन्तर्हित ही थीं — और जोड़ी हैं:

(१) ग्रामोद्योगोंको अुत्पादनका निश्चित हिस्सा सौंपा जाय, और

(२) दोनों सेक्टरोंके लिअे समान कीमतकी नीति अमलमें लायी जाय।"

(अंग्रेजीसे)

सी० के० नारायणस्वामी

ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम

[तीसरी आवृत्ति]

लेखक: जुगतराम दवे; अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

विषय-सूची

		पृष्ठ
खादी और ग्रामोद्योग	गांधीजी	१९३
श्रद्धांजलि	सुशीला नैयर	१९३
कच्छमें शराबबंदी	परीक्षितलाल मजमुदार	१९४
बुद्ध और आधुनिक जगत	सुरेश रामभांअी	१९५
मैं बी० सी० जी० के टीकेका विरोध क्यों करता हूं?	च० राजगोपालाचार्य	१९६
शिक्षा और योजनाबद्ध विकास	मगनभाई देसाई	१९८
रेलोंमें विशाल पैमाने पर भ्रष्टाचार	मगनभाई देसाई	१९८
खादी बोर्डकी द्वितीय पंचवार्षिक योजना	सी० के० नारायणस्वामी	१९९

www.vinoba.in